सामाजिक यथार्थवाद की बुनियाद पर टिकी महेन्द्र भीष्म की कहानियाँ जीवन के अनेक मोड़, अनेक उतार चढ़ाव के ग्राफ को दर्शाती हुई संवेदना को प्रगाढ़ करती हैं। प्रकृति के समीप होते हुए भी ये कहानियाँ भाषा और शिल्प की दृष्टि से कसी हुई हैं। इनमें अंकित घटनाएं-प्रतिघटनाएं बहुत हद तक मानव की मनोदशा निर्धारित करती हैं और भविष्य की दिशा सुझाती हैं।

'तीसरा कम्बल' की कहानियों में वर्तमान समय की तल्ख सच्चाइयाँ हैं, साथ ही व्यक्ति के मनोभावों का रोचक विश्लेषण व्यंजित है। अगर साहित्य जिन्दा रहने की ताकत पाने के लिए पढ़ा जाता है तो यह कहानी संग्रह उम्दा मिसाल है, प्रत्येक कहानी में मर्म को समझते हुए जीवन-दर्शन से भरी कितनी ही पंक्तियों को संचित किया जा सकता है।

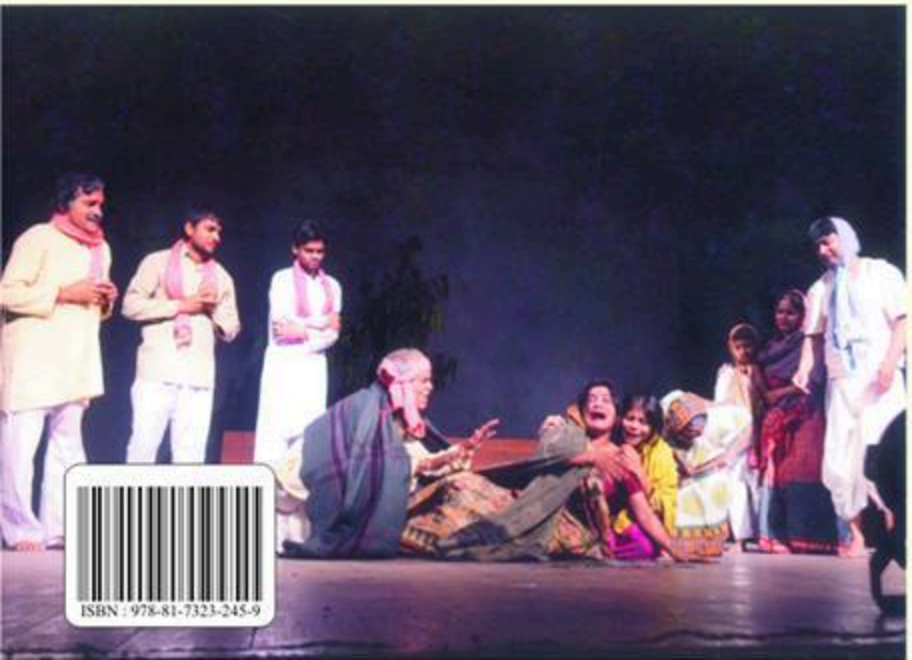

ISBN : 978-81-7323-245-9

तीसरा कम्बल व अन्य कहानियाँ

महेन्द्र भीष्म

तीसरा कम्बल

व अन्य कहानियाँ

महेन्द्र भीष्म

तीसरा कम्बल

व अन्य कहानियाँ

महेन्द्र भीष्म

बसंत पंचमी 1966 को ननिहाल के गाँव खरेला, (महोबा) उ.प्र. में जन्मे महेन्द्र भीष्म की प्रारम्भिक शिक्षा बिलासपुर (छत्तीसगढ़), पैतृक गाँव कुलपहाड़ (महोबा) में हुई। अतर्रा (बांदा) उ.प्र. से सैन्य विज्ञान में स्नातक। राजनीति विज्ञान से परास्नातक बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से एवं लखनऊ विश्वविद्यालय से विधि स्नातक महेन्द्र भीष्म सुपरिचित कथाकार हैं।

कृतियाँ

कहानी संग्रह : तेरह करवटें, एक अप्रेषित-पत्र (तीन संस्करण), क्या कहें? (दो संस्करण)
उपन्यास : जय! हिन्द की सेना (2010), किन्नर कथा (2011)

इनकी एक कहानी 'लालच' पर टेलीफिल्म का निर्माण भी हुआ है।

महेन्द्र भीष्म जी अब तक मुंशी प्रेमचन्द्र कथा सम्मान, डॉ. विद्यानिवास मिश्र पुरस्कार, महाकवि अवधेश साहित्य सम्मान, अमृत लाल नागर कथा सम्मान सहित कई सम्मानों से सम्मानित हो चुके हैं।

संप्रति : मा. उच्च न्यायालय इलाहाबाद की
लखनऊ पीठ में संयुक्त निबंधक/न्यायपीठ सचिव
सम्पर्क : डी-5 बटलर पैलेस ऑफीसर्स कॉलोनी
लखनऊ - 226 001
दूरभाष : 08004905043, 07607333001
ई-मेल : **mahendrabhishma@gmail.com**

आवरण : डॉ0 भूपेन्द्र प्रताप अवस्थी
जन्म : 2 दिसम्बर, 1982, कुलपहाड़ (महोबा), उत्तर प्रदेश में। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कुलपहाड़ (महोबा) में दन्त चिकित्सक। ड्राईंग कम्पटीशन (हैदराबाद) में राष्ट्रीय स्वर्ण पदक प्राप्त। आपकी कला कृतियाँ राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ से पुरस्कृत हैं।

आवरण में कहानी 'तीसरा कम्बल' की नाट्य प्रस्तुति के चित्र। कहानी 'तीसरा कम्बल' का नाट्य रूपान्तरण व निर्देशन श्री विनोद मिश्र, सचिव, कलाकार एसोसिएशन उ.प्र. द्वारा किया गया।

(2)

महेन्द्र भीष्म

तीसरा कम्बल

व अन्य कहानियाँ

(3)

ISBN : 978-81-7323-245-9

प्रकाशक :
सुलभ प्रकाशन
17, अशोक मार्ग, लखनऊ 226 001

संस्करण : 2013
पेपर बैक संस्करण : ₹ 60/-
पुस्तकालय संस्करण : ₹ 150/-

© महेन्द्र भीष्म

संपर्क सूत्र : 08004905043
07607333001
e-mail : mahendrabishma@gmail.com

कम्प्यूटर कम्पोजिंग : मनीष अग्रवाल

आवरण : डॉ0 भूपेन्द्र प्रताप अवस्थी

मुद्रक : आर्टवर्क
12, जगत नरायन रोड, गोलागंज, लखनऊ

Teesra Kambal
by Mahendra Bhishma
Published By : SULABH PRAKASHAN
17, Ashok Marg, Lucknow 226 001

ताजी हो गई स्मृति
वही चिर-परिचित
अश्रु मिश्रित मुस्कान के साथ।
विदाई के उन क्षणों में
छुए थे जब चरण तेरे
फूट पड़ी थी अश्रुधारा
ममता के अगाध
सागर के किसी कोने से।
छलक पड़े हैं दो आँसू
आज इस अकेलेपन में
माँ! तेरी स्मृति में।

.....अम्मा जी को।

अनुक्रम

स्त्री	07
मात	11
स्टोरी	15
नसीबन	22
तौब़ा-तौब़ा	28
वैष्णव	33
निखट्टू	39
एक नग नारी	45
एक था चित्रांशी	51
मुख़बिर	60
छुटकारा	69
वीरेन्द्र	71
तीसरा कम्बल	82
दफ़ा 376	91
सो जा बारे वीर	101
'माँ' अब कभी वापस नहीं आयेंगी	110
कबरीके	113
क्या कहें?	116

स्त्री

अभी पिछले वर्ष की ही तो बात है। महरी रामदई ने राम को प्यारी होने से कुछ माह पूर्व अपनी ब्याहता बेटी कुसुमा का पत्र मुझे पढ़ाया था। पत्र बुन्देली में टूटी-फूटी हिन्दी के साथ था, पर उस पत्र में व्याप्त वेदना के स्वरों ने मुझे मर्माहत कर दिया था। ससुराल में अपार यातनाओं को सहते हुए माता-पिता को सम्बोधित पत्र की इन पंक्तियों ने मेरे कवि मन को बार-बार झकझोरा था, 'जोन पाँव पूजे हते तुमने मड़वा के तरें, उनई पाँवन से आज मोरे अंग-अंग सूजे हैं।' तब मैंने कुसुमा के पत्र की इन दो पंक्तियों के आधार पर जो कविता लिखी, वह कवि सम्मेलनों में बारम्बार सराही गयी। विशेषकर कविता की अन्तिम पंक्तियाँ पढ़ते ही मेरी और सुनने वालों की आँखें बरबस छलछला आतीं -

जिन पाँवों को पूजा था तुमने मंडप के नीचे

उन्हीं पाँवों से आज मेरे अंग-अंग सूजे हैं।

ससुराल में बेटी की हो रही दुर्गति पर, स्त्री-यातना की इस मार्मिक अभिव्यक्ति को अद्वितीय कहा गया। मुक्त कंठ से सराहा गया।

उसी रामदई की बेटी कुसुमा अपनी माँ के देहान्त पर जब मायके आयी तो फिर पुनः ससुराल नहीं गयी। गाहे-बगाहे झाड़ू-पोंछा करते या बरतन मांजते वह मुझे अपनी दुःख भरी दास्तान सुना जाती। मेरे हृदय में उसके प्रति सहानुभूति पनपती...उम्र ही क्या थी?मात्र बाइस-तेइस बरस....सात-आठ साल ससुराल में रह चुकने की योग्यता-क्षमता .... आवारा, निठल्ला पति....विधवा सास, बाहर छोटी-मोटी नौकरी करता जेठ, जेठानी और जेठानी के बच्चे.....सबकी उसार, घर-घर बर्तन मांजना, झाड़ू-पोंछा करना, रात पति की बर्बरता झेलना, शराब और जुआ के लिए पैसे झपटते पति से आना-कानी करने पर लात-घूंसों की मार सहना। उलाहना देने पर सास की गालियाँ, जेठानी की झिड़कियाँ और ताने सुनना। भोर उठ जाना, पाँच-छः घर निपटाते-निपटाते दिन के ग्यारह बजे चाय नसीब हो पाना। जेठानी के बच्चों का मल-मूत्र धोते-नहाने-खाने में दोपहर बीत जाती-- शाम से फिर वही खटराग बर्तन-झाड़ू-पोंछा,